बी॰ए॰ भाग-3
हिन्दी - प्रतिष्ठा
(काव्यशास्त्र-महाकाव्य)

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी॰के॰ कालेज, डुमराँव
बक्सर

महाकाव्य या प्रबन्ध काव्य के लक्षण —

'महाकाव्य' को प्रबंध काव्य भी कहते है। पाश्चात्य साहित्य में इसके लिए एपिक (Epic) शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह अत्यंत प्राचीन काव्य - विधा है। हमारे यहाँ रामायण और महाभारत जैसे विशाल महाकाव्य लिखे गये हैं जिन्हे उपजीव्य काव्य भी कहा जाता है क्योंकि ये परवर्ती काव्यों - महाकाव्यों के स्रोत भी हैं। इसीलिए प्राचीन समय से ही इस विधा के स्वरूप एवं लक्षणों पर विचार किया जाता रहा है।

महाकाव्य 'महत्' और 'काव्य' इन दो शब्दों से व्युत्पन्न पद है। काव्य के साथ महत् शब्द का प्रयोग सबसे पहले वाल्मीकि - 'रामायण' में मिलता है - "कर्त्ता काव्यस्य महत: वव चासौ मुनिपुंगव" इस पंक्ति से महत् काव्य (महाकाव्य) के तीन लक्षणों पर प्रकाश पड़ता है - महाकाव्य के आकार की विशालता, किसी महान् चरित्र की प्रतिष्ठा और प्रणेता की महानता।

भारतीय काव्यशास्त्र में संभवत: सर्वप्रथम आचार्य भामह ने महाकाव्य के स्वरूप - निर्धारण का प्रयास किया है। उन्होंने स्वरूप विधान के आधार पर काव्य के पाँच भेद किये है। महाकाव्य उनमें से एक है। भामह कृत महाकाव्य का लक्षण इस प्रकार है —

सर्गबंधो महाकाव्यं महतां च महच्च यत्,
अग्राम्यशब्दार्थं च सालंकारं सदाश्रयम्
मंत्रदूत प्रयाणाजिनायकाभ्युदयैश्च यत्, पंचभिः
संधिभिर्युक्तं नातिव्याढ्येयमृद्धि मत् ॥
चतुर्वर्गाभिधानेऽपि भूयार्थोपदेशकृत युक्त लोक
स्वभावेन रसैश्च सकलैः पृथक् ॥

अर्थात महाकाव्य उसे कहेंगे जो सर्ग बद्ध, महान चरित्रों से संबद्ध, आकार में बड़ा, नाटक की पंच संधियों से युक्त, चारों पुरुषार्थों के निरूपण से सम्पन्न और प्रायः सभी रसों की उपस्थिति से समृद्ध होता है।

साहित्य-दर्पणकार विश्वनाथ ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों के मतों का समन्वय करते हुए महाकाव्य का लक्षण इस प्रकार बताया है-महाकाव्य सर्गबद्ध होता है। उसमें एक नायक होता है जो कि देवता या कुलीन क्षत्रिय होता है। वह धीरोदात्त नायक होता है। कहीं-कहीं एक ही वंश के अनेक राजा महाकाव्य के नायक होते हैं। शृंगार, वीर शांत और करुण में से कोई एक रस अंगी होता है और अन्य रस अंग होते हैं। इसमें सभी नाट्य संधियों की योजना होती है। इसका वृत्त ऐतिहासिक होता है और कथा के पात्र प्रायः सज्जन होते हैं। चार पुरुषार्थ इसके फल होते हैं। प्रारंभ में मंगलाचरण की योजना होती है।

सूर्य, चंद्रमा, संध्या, प्रदोष, मृगया, शैल, सरित आदि का सांगोपांग वर्णन अपेक्षित है। महाकाव्य का नामकरण कवि, नायक या किसी अन्य प्रमुख पात्र के नाम पर होना चाहिए।

उपर्युक्त परिभाषाओं के अनुशीलन से महाकाव्य के जो प्रमुख तत्व सामने आते हैं, वे हैं कथावस्तु और उसका संगठन, नायक, रस, छंद, वर्णन, नाम और उद्देश्य।

महाकाव्य की कथा विस्तृत और पूर्ण जीवन-गाथा होती है जिसे नाटक की संधियों के नियमानुसार आठ से अधिक सर्गों में संगठित होना चाहिए। कथा का प्रारंभ आशीर्वचन, मंगलाचरण आदि से होना चाहिए और सर्ग के अन्त में आगामी सर्ग की कथा की सूचना होनी चाहिए। महाकाव्य की कथा इतिहास से अथवा किसी महापुरुष के वास्तविक जीवन-गाथा के आधार पर होनी चाहिए। महाकाव्य का नायक कोई देवता, उच्च कुल में उत्पन्न क्षत्रिय अथवा राजा हो सकते हैं, परंतु उनमें धीरोदात्त गुणों का समावेश होना आवश्यक है। ऐसे व्यक्ति का चरित्र निश्चय ही समाज में सद्वृत्तियों का विकास करने वाला और दुर्वृत्तियों का विनाश करने वाला होगा।

महाकाव्य का उद्देश्य चतुर्वर्ग - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति मानी गयी है।

इसका विश्लेषण करें तो हम देख सकते है कि नायक या तो किसी परोपकार के कार्य या सिद्धांत की रक्षा के लिए अपने जीवन को व्यतीत कर रहा है, या विजय द्वारा किसी समृद्धि को प्राप्त करता है अथवा अपना अभीष्ट किन्तु दुर्लभ कार्य सिद्ध करता है, इन उद्देश्यों की सिद्धि के लिए संघर्ष, साधना, चरित्र-विकास, उच्चगुण आवश्यक है। इनका चित्रण विभिन्न परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में किया जाता है। अतएव महाकाव्य एक युगप्रवर्तनकारी संघर्ष-चित्रण या सांस्कृतिक उद्घाटन का महत्म कार्य करता है।

हिन्दी का आरंभिक महाकाव्य चंदबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' है। इसमें मानव जीवन की व्यापक संघर्षगाथा पहली बार चित्रित हुई है। जायसी का 'पद्मावत', तुलसीदास का 'रामचरितमानस', हरिऔध कृत 'प्रिय प्रवास' मैथिलीशरण गुप्त कृत 'साकेत' जयशंकर प्रसाद रचित 'कामायनी' और दिनकर की 'उर्वशी' हिन्दी की प्रमुख महाकाव्य हैं।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर - 'बिहार'